# शब्दों की दुनिया से निकाल फैंके हुए लोगों की कविता

**डॉ. श्रवण कुमार**
**सहायक प्राध्यापक हिन्दी**
**जय नारायण व्यास यूनिवर्सिटी**
**जोधपुर**

'सच्चाई की पहचान की पानी साफ रहे,'

जो भी चाहे परख ले, जलाशय के तल को,

गहराई का भी भेद छिपाते हैं केवल

जो जान–बूझ गन्दला कर।

–नीत्शे

छद्म वेष में आये थे फिरके, मूल सम्पदा पर काबीज हो गये। नाम चीन व्यक्तियों को अपने में पचाकर अपनी उनकी, पीछे आगे की सात समुद्र पार (रूस) की सारी संस्कृतियों को मिटाकर, मिलाकर स्वयं में अन्तर्मुक्त कर लिया। मूल निवासियों को शिक्षा से वंचित कर, स्त्री, पशु, जमीन, धन एवं जीवन को नेस्ताबूद कर पोप शास्त्र फैलाया।

कभी यहाँ कन्फ्युशियस एवं ताओ की 'हान' (ध्यान) परम्परा के कारण ज्ञान एवं विज्ञान, सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र था। उनके शिक्षा केन्द्रों को नष्ट किया नंदों का नालन्दा जो द्रविड़ों का था। त्वष्टा (खाती या तक्षक) को मार कर उसके ज्ञान केन्द्र को नष्ट कर उसके जीवित सिर कलम करने के बाद नया तक्षशिर (तक्षशिला) विश्वविद्यालय बनाया, भोज मेघ जो कुन्ती का पिता था उसका भोज

केन्द्र जो विक्रमशिर (विक्रमशिला) विश्वविद्यालय नाम दिया। दित (सूर्य) का औदन्त पुरी विश्वविद्यालय, प्राचीन हान–विहान के विद्यापीठ थे। उन पर आर्यों की शक–यवन जाति ने ब्राहम्ण के रूप में क्षत्रिय के रूप में एवं वैश्य रूप में अन्तर्मुक्त कर लिया जो मूलतः जार, सैनापति, सैनक एवं व्यापारी वर्ग थे।

मार्श या मंगल ग्रह (रूस) जो आकाश से अवतरित है। स्काइथ (कैथी) या कायस्थ चित्रगुप्त के पृथ्वी पर आगमन से हाहाकार मच गया क्योंकि वह मास्क लगाकर नरसिंह भेड़िया, वराहावतार (वराहमिहिर यूनानी) कच्छप अवतार (हैक्सास) मीनावतार (टोटेम) आदि रूप बदलकर नाटकीय रूपकों से, इक्षुवाक (मृदुल भाषी) में एवं कड़कती (परस) वाणी में द्विज चित्रगुप्त उद्घोषणा करता है –

मैं तुम्हें यमलोक ले जाने आया हूँ। धरती (भाभी) का आदमी बोला क्यों? तब यमन–राज बोला – तुमने बहुत पाप किये हैं? ओर यवन–राज चित्रगुप्त धरती के आदमी को कौड़े बरसाने शुरू कर देता है। कहता है में इसे यम लोक ले जा रहा हूँ। इसके आतंक से सम्पूर्ण पृथ्वी पर यवन राज का पहरा हो गया। जब इच्छा होती चार–पाँच काले वस्त्रों में सिपल सार आते, जो भी छोटा बड़ा मिलता उसको गरूड़ राज के मुख में धकेल देते। उसके शासन में प्रतिदिन ग्यारह व्यक्त्यिों की नर बलि लेता था। वह 'रक्तबीज' था उसने Red Indian (इन्द्र) 'रक्त बीज' सर्वत्र अपनी संतति के रूप में फैला दिये। उसने यहाँ के मूल निवासी आम्बी–अम्बे माँ, नंदों का वंश (नाग या मेघ–ग्वालों) का राजवंश, कृष्ण (राम, या बुद्ध) के गोरखनाथ (ग्वाल) की ज्ञान (हान)– प्रकृति विद्या पर कृत्रिम स्वांगों द्वारा (नीति

साम–दाम–दण्ड–भेद) देवता बन गया। बाहर से अतिथि विदेशी (आत्मीय जनों) को सदा परम्परा रूप में बुलाकर यहाँ के लोगों को पंचाल (पंच देवता) कूट–आदेश देता– द,द,द।

उसका अर्थ गुप्तकाल में गुप्त था। अतिथि देवताओं के लिए द का अर्थ था दया करो, दूसरा द से आशय उन्हें, भूमि, स्त्री एवं धन का दान करो तथा यहाँ के मूल निवासियों के लिए दैत्यों (सूयों या कलाकेयों) का दमन करो। दास हाथ जोड़े जी जी जी का मन्त्रोचार करने लगा। आज वही चित्रगुप्त सक–सेना देवता द्विज है–

'वह पैदा हुआ था तब मनुष्य था।'

कुछ भी नहीं था उसके पास/माथे पर अहंकार का कृत्रिम वैदिक तिलक/न शरीर पर किसी श्रेष्ता का जनेउ। न सिर पर किसी 'साहेब ग्रंथी की पगड़ी'/न बर्बर आदिम काल की पशुता का खतना/न गले में लटका, किसी की विवशता का क्रॉस/वह मनुष्य था/ निरा कोरा मनुष्य/वह नहीं जानता था/कोई धर्म/वर्ण/जाति/भाषा और विभेद अब उसे सीखनी थी मानवता, मनुष्य होने का सही अर्थ किन्तु सीख गया नर पिशाच देव के लक्षण।''1

अध्यात्म के नाम पर 'ब्रह्म जार दुरूस्थ' (जर थ्रुस्त्र) के ब्रह्म वादियों ने ब्रह्म (ज्ञान) को अद्धैत, द्धैत, शुद्धद्धेत, विशिष्ट द्धेत एवं द्धैताद्धेत आदि फैलाकर ज्ञान विज्ञान बुद्ध परम्परा को पुष्यमित्र (रक्तबीज) ने वितण्डावाद फैलाया।

आठवीं सदी के गोड़ साहब शंकर ने इस ब्रहमा को नया रूप दिया। राममनोहर लोहिया के शब्दों में –

'इस विध में वर्ण व्यवस्था में पूरा जकड़ाव कमोवेश पूरी तरह बना रहा। निर्गुण सत्य और सगुण सत्य के बीच एक अद्भुत अन्तर स्पष्ट करके भगवान शंकर ने आध्यात्मिकता की उंची उड़ान के साथ, कपटी सामाजिक व्यवस्था का मेल बैठाने के लिए एक दार्शनिक आधार दे दिया।'2

सच तो यह कि शंकर और तारानाथ बौद्ध के अनेकों शास्त्रार्थ में सभी जगह निर्गुण (ज्ञान–विज्ञान) की ही जीत हुई है प्रपंच सगुण मिथकों पर आघृत होने के कारण हार गया। किंतु शंकर ने सम्पूर्ण भारत में अनेकों मन्दिर एवं पीठ बनवाकर अपनी कृत्रिम भगवान (सगुण) बुत् को बचा लिया। यही पुष्यमित्र शक (विष्णु) के बाद भारत में शंकर भगवान की दूसरी विजय थी। उसके बाद मन्दिर अकर्मण्य आशारामों एवं झंसारामों के धन कुबेरों के अड्डे बन गये।

भारत में स्वस्थ बौद्धिकता द्वारा, अस्वस्थ बौद्धिक आध्यात्मिकता का उपयोग किया गया। जिसमें मनु का अपनी पुत्री इड़ा (सरस्वती) 'सा ब्रहमाच्युता' अनैतिक कर्म से आदिवासी जनता त्रस्त होकर उसे खदेड़ देती है उसका अत्याचार शिवि (शिव) पशुपत् (साण्ड) नंदी धर्म था। जिससे हिन्दू धर्म का प्रसव है। बौद्ध धर्म प्राकृत धर्म था सनातन धर्म कृत्रिम हिन्दू धर्म था जो आकाशीय चमकीले पुतलों ने जमीन पर आकर (सनातन) बनाया था।

जैवों (देवों) ने मूल निवासी स्त्री अर्थात् तीन देवों ने (स्त्री) के साथ रमण किया तभी स्त्री शब्द बना 'रमैया की दुल्हनिया ने लूटा बाजार

ब्रह्मा लूटा, विष्णु लूटा, नारद मुनि के परिपछार।'

यहुदिया (अयोदिया– अयोध्यों) ने देवालायों में देवदासियों को रखकर उनकी संतान को बिना पिता की सन्तान हरि–जन कहा+ डॉ. रणजीत के शब्दों – 'मैं पैदा हुआ होता हिन्दुसान के किसी गाँव में किसी मेहत्तर के घर में और तुम मुझे शाम के अन्धेरे में कुएँ में पानी भरते हुए पकड़ लिया जाता या किसी कस्बे में म्यूनिस्पेलिटी के नल से पानी पीते हुए और इस अपराध के लिए मेरी लाठी डण्डों से की जाती पिटाई .......... स्कूल में मुझसे अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाता, छू लेने पर स्वर्ण मारता मुझे हरिजन के छोरे की यह हिम्मत कहकर क्या मेरा खून नहीं खोल जाता।'3 किंतु यह तो सनातन परम्परा है इस परम्परा की एक प्राचीन कथ्य जो सर्वविदित है–

'मेग्डेलीन जिसे ईसा के छूने से पहले, संसार उसे एक वेश्या कहता था फिर बाद में उनकी एक संत की भांति पूजा करता आया है। इस पर गिरजा का निर्माण भी मैग्डेलीन के प्रति आदर और स्मृति में किया गया था। जिसकी महान् कथा यही बताती है कि हर कोई एक दूसरें के बराबर और एक सन्त या एक वैश्या मूल रूप में एक ही है.......... किंतु अट्ठारह सौ वर्ष बाद पेरिस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी को विवेक की देवी की उपाधि से विभूषित किया गया था।'4

भारत में वर्ण से सभी नकुल (पाण्डव) वर्ण से हैं। न कुल है जिसका नकुल। क्योंकि जो सवर्ण, सुवर्ण जाति थे वह विवर्ण या काले वर्ण के हो गये हैं। आर्य सभी अनार्य हो गये है। किंतु जाति के नाम पर यह वानर सेना शाखा पर बैठकर एक दूसरे की शाखाओं पर बैठकर शाखा–मृग की तरह भूल रहे हैं 'माटी का पूत' कविता संग्रह में कवि जसराम हर नोटिया ने लिखा है–

'एक झूठा बेर खाया'
तुम वन गये भगवान

हमने खाई झूठन सदियों से
नहीं बन पाये इन्सान।'' 5

प्रारम्भ में मनुष्य ने राजा की ईश्वर के रूप में सर्वप्रथम महर्षि उदयन ने कल्पना की थी उसके बाद राजतन्त्र समाप्त होने पर नित्शे ने घोषणा कर दी कि ईश्वर मर चुका है। आज का ईश्वर प्रजातन्त्र है, चुनाव है दास युग पूंजीवाद या राजावाद या सामन्तवाद में वह सामन्त ईश्वर था। तथा वह सामन्तों का राम राज्य सतयुग था। राम का राज्य नहीं राम पर चंद्रों का राज्य। इन्दों का राज्य। त्यागी राम का नहीं, ऐश्वर्य या भोंगी राम चंद्र का राज्य/ऐसे ही त्रेता में तीन यजनों या ब्राह्मणों, क्षत्रियों एव वैश्यों द्वारा खेला गया द्युतक्रीड़ा अनार्य पर दूसरी जय थी।

द्वापर में सन्देह एवं अनिश्चिता द्वारा काल को तीसरे काल समाजवाद भाग में बांट दिया जिसमें बहुतों की आजादी थी किंतु दलितों को मात्र कल्याण मोक्ष अर्थात् मृत्युदण्ड दिया गया। अब कलिकाल में मूल निवासी कलि वर्ण (श्याम) लोगों का युग है साम्यवाद का युग है सभी की आजादी है।

विश्व की दो धारायें, दो संस्कृति के रूप में अनादिकाल से प्रवाहमयी है जिसमें एक ही आहुति लगती है दूसरा उसका उपभोग करता है सुकरात, ईसा, राम, मंशुर गोरख, कबीर, पलटूदास, सागरमल गोपा, असफाक उल्लाह एवं भगतसिंह ने अपनी सत्यनिष्ठा से अपने प्राणोत्सर्ग कर दिये थे। सुकरात पर कैथौलिक राजाज्ञा द्वारा छात्रों को भडकाने के विरोध में राजद्रोह किया है, के अपराध में मृत्युदण्ड विषदान के रूप में दिया गया।

गोरख को भगवान मीन अवतार के अवैतिक कर्मों से छुटाकारा पाने के लिए भाग (जाग) मच्छेन्द्र गोरख आया। हे एलेक्जेण्डर भोग विलास मत कर। – एलेक् नी रंजन। यह हान पवित्र भूमि है। यह

भोग भूमि नहीं है किन्तु मत्स्य इन्द्र ने इसे काम भूमि बना दिया, वृषल बना दिया। शक– इन्द्र ने गोरख कृष्ण वर्णी ग्वाल को 'गोरखधन्धे' रोजी रोटी के लिए मोहताज कर दिया।

पलटू दास को भी सत्यनिष्ठ के लिए जिन्दा जला दिया। कबीर को सच्ची कहानी कहने पर 'समुद्र किनारे फैंखा हुआ' नाजायज सन्तान' कह डाला।

आज सबरी माला मन्दिर में स्त्रियों के प्रवेश के निषेध के लिए दो कारण मानते हैं 1. उनका राजस्बला होना तथा 2. दूसरा कारण अय्यप्पा सबरीमाला का पुजारी स्त्रियों को देखकर उत्तेजित होता है वह लंगोटी से कच्चा है। ये दोनों ही तर्क बेबुनियाद है क्योंकि स्त्रियाँ रजस्वला होती है तो क्या मंदिर का पुजारी अपनी पिछाड़ी और जूजी को साफ रखता है? यह भी देखना होगा।

दूसरा कारण वह एय्यपा मन्दिर आराध्य है जो किन्नर विष्णु एवं शिव के मन्दिर में सबरी देवदासी से उत्पन्न अय्यपा है अतः वह स्त्रियों को देखकर उत्तेजित होता है।

गोपाल कृष्णन् का कहना है– 'अगर स्त्रियों का प्रवेश होता है तो हम उनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर पायेंगे, हम नहीं चाहते हैं कि यह थाइलैण्ड की तरह किसी सेक्स टूरिज्म के अड्डे में बदल जाए।'

इस प्रकार मठाधीशों की खुली चुनौती है। साधू कविता में अमर रामटेक ने लिखा है–

'राष्ट्र अपने सच से बनता है'
समाज अपने साधू उगाता है
तब भी व्यक्ति अध्यात्म से
बौना रहता है और नैतिक
शिक्षा से सना हर कोना रहता है।''6. सामन्त और पूंजीपति समाज ने शोषित जाति के साथ सदा से अत्याचार किया है आज नयी कविता के दौर में वर्ग चेतना को दबाने के लिए प्रतिरोध के स्वर मुखरित होने

लेगे है। सरकार ‘Me too’ के संदेश द्वारा महिलाओं के अत्याचारों को कम किया जा सकता है अश्वेत अमेरिकी महिला सुश्री तराना बुर्के ने 2006 में स्त्रियों पर हो रहे शोषण और हिंसा को केन्द्र में रखकर इस आन्दोलन को 2017 में तेज गति प्रदान की। तभी अमेरिका की अभिनेत्री अलीस्सा मिताली ने महिलाओं को संदेश दिया कि यदि कभी यौन शोषण हुआ है।

तो '#' टैग मी टू’’ टवीट करें। जिससे अपराधो पर नकेल कसी जा सके। 2018 में तनु श्री दत्ता ने ’मी टू’ के जरिये उछाल आया जिसमें निर्देशक राकेश सारंग, निर्माता समीर सिद्धीकी और नृत्य संचालक गणेश आचार्य पर मुकदमा दर्ज हुआ। इससे बालीवुड के अनेक महान बने लोगों पर पैबंद डीले हो गये।

अब कारपोरेट घराना, शैक्षणिक संस्थान, सरकारी/गैर सरकारी/ राजनीति/ सेना/न्यायपालिका से जुड़े महानुभवों का नम्बर लगना बाकी है।

विरोधी ताकतों ने प्रतिरोध स्वरूप अपने पूंजी के बल पर जंगल राज, भीड़तन्त्र, दबंगों के अत्याचार, राजनेताओं के ऐश्वर्य पूर्ण निर्लिप्तता से प्रजातन्त्र का गला घौंट दिया है।

विभिन्न कम्पनियों द्वारा संचालित वाटसप पर भड़काऊ मैसेज साझा करना, मीडिया द्वारा उत्तेजना वाले समाचारों को प्रकाशित करना, प्रतिदिन हो रहे दलितों पर बालयौन शोषण, स्त्री शोषण से प्रताड़ना। मौब लीचिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूखमरी की समस्याऐं आदि यथार्थ रूप समाज को दिखाई दे रहा है।

वर्ग चेतना को दबाने के लिए प्रतिरोध की परम्परा जारी है।

भाषा के संबंध में– सदियों से शब्दों की दुनियॉ से निकाल कर फैंका हुआ ग्वार (मेघ ग्वार) व्यक्ति हिब्रू (संस्कृत) नहीं जानता है।

कालिदास ने इस ग्वाल जाति की भाषा को प्राकृत (देशी भाषा) भास कहा है। जबकि संस्कृत कृत्रिम भाषा है।

पाणिनी के आखर ज्ञान से सिर खपाने के लिए समय नहीं जो मात्र शब्द जाल मात्र है। कबीर ने कहा पोथी पढ़ जग मुवा/ पण्डित भया न कोय/ ढाई आखर प्रेम से पढ़े सो पण्डित होय।।

अन्यत्र भी कहा हैं – कुमति लागि तुझे सुधी पाण्डे/ पेटे न काहु बेद पढ़ाया के माध्यम से बनावटी शब्द जाल नीतियों द्वारा निर्धारित जातिगत राजनीति की संस्कृति का समावेश कर मूल भाषा या देशी भाषा को असांस्कृतिक बताया है। इनकी भाषा, हवाई किले, स्वाभावोक्ति, व्रजना से जाति के अर्थ में एवं आलंकारिक रूप में प्रयुक्त करते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भारतीय कविता को 'स्मृत्याभास कल्पना' इतिहास को आदिवासी स्त्रियों के साथ निर्बाध भोग विलास की ओर संकेत किया है।

दूसरी ओर डॉ. नामवर सिंह ने साधारण जन की कविता को अकविता, सकविता, उसकी कविता, नंगी कविता एवं बैलोस आवाज तथा हाट बाजार की कविता नाम दिया है।

जबकि सवर्णों की प्रबंधात्मक कविता में पूंजीपति सामन्त के मनमाने अत्याचार की कविता है जिससें सीताहरण, द्रोपदी चीरहरण, पंच व्यक्तियों की रखैल, कुंती भोज मेघ की पुत्री के साथ भी पंचाल विदेशी यूनानी आकाशीय देवताओं द्वारा गणिका–नृत्य था जिसमें कुमार्य अवस्था में ही कर्ण जैसे व्यक्ति को हरिजन या दलित बनाया था यह कविता तभी ही अच्छी हो सकती है जब यह कथा इनके भी घर की कहानी बने।

अतः आज का साहित्य समग्र भूखण्डल का दर्पण है जबकि सवर्ण युग का साहित्य मात्र, सवर्ण सामाज के साहित्य का दर्पण था। आज

जमीन की कविता है ओर कविता की जमीन के रूप में बेलौस कविता के रूप में सर्वहारा वर्ग के मुख से मुखरित हुई है।

## संदर्भ सूची


1. बयान– संपादक – मोहनदास नैमिशराय, बी.जी. 5ए/30 वी पश्चिम विहार, नई दिल्ली, सं. अक्टूबर 2014, पृ.सं. 32
2. इतिहास चक्र– राम मनोहर लोहिया, लोक भारती प्रकाशन– इलाहाबाद, नई दिल्ली, पटना, पंचम संस्करण – 2007 पृ.सं. 39
3. बयान – संपादक – मोहनदास नैमिशराय, बी.जी. 5ए/30 बी पश्चिम विहार, नई दिल्ली, सं. अक्टू. 2014 पृ.सं. 35
4. इतिहास चक्र– राम मनोहर लोहिया, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2007, पृ.सं. 76
5. माटी का पूत– जसराम हरनोटिया (झूठा बेर), लता साहित्य सदन, ई–10–666, उत्तरांचल कॉलोनी, लोनी बॉर्डर, गाजियाबाद, पृ. सं. 75
6. बयान– सम्पादक मोहनदास नैमिशराय, वहीं, सं. अप्रेल 2014 पृ. सं. 37



**डॉ. श्रवण कुमार**

हिन्दी विभाग, भाषा प्रकोष्ठ,

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर।

मो.न. 9352671936